Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

नवम्बर 2023 (प्रथम)

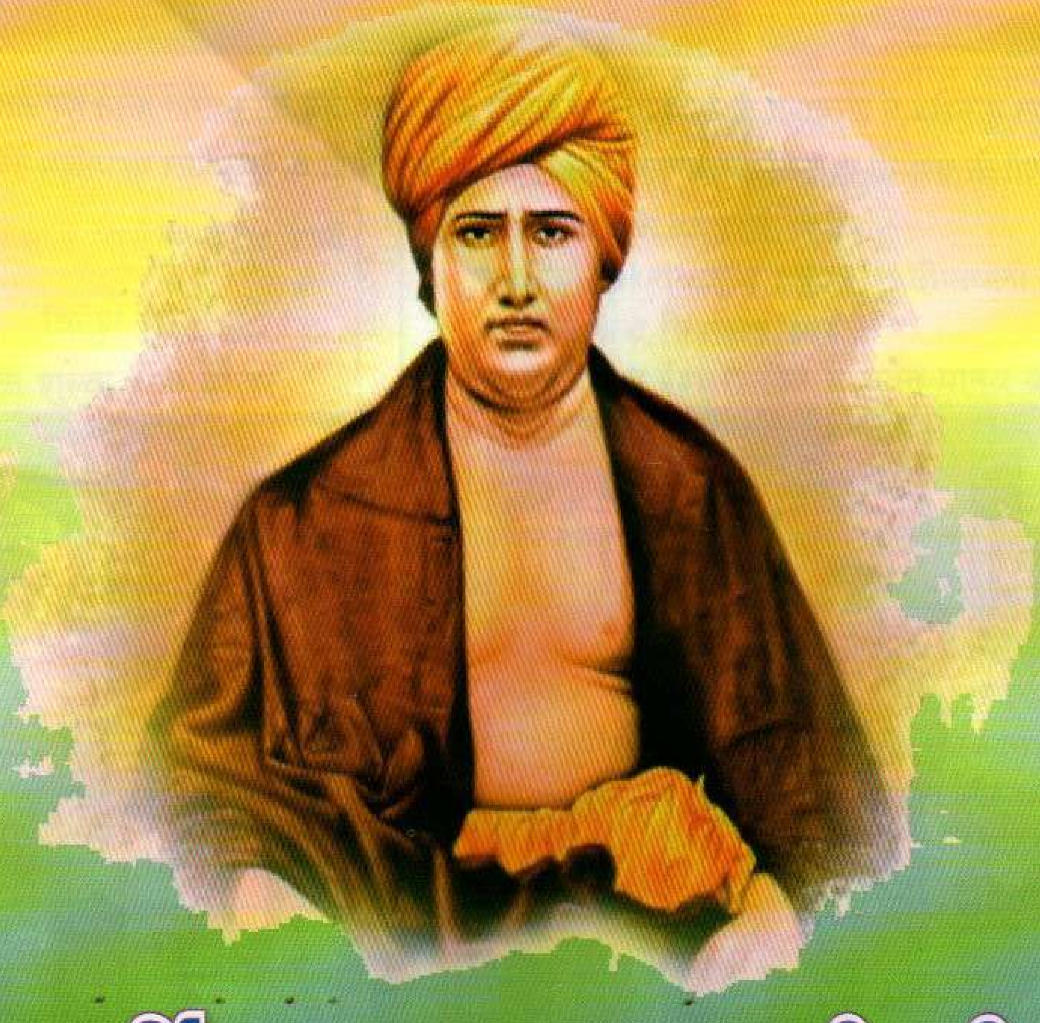

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में हरियाणा के राज्यपाल महामहिम बंडारू दत्तात्रेय का स्वागत करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य, साथ में है गुजरात के राज्यपाल महामहिम देवव्रत जी आचार्य।

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जी.टी. रोड पानीपत पानीपत में मीटिंग के दौरान उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य, उपमन्त्री अनुराग खटकड़, कोषाध्यक्ष बहन सुमित्रा आर्या, संरक्षक श्री कन्हैयालाल आर्य व अन्य अन्तरंग सदस्य।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 19

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

नवम्बर, 2023 (प्रथम)
1 से 15 नवम्बर, 2023 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय-वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. स्वास्थ्य चर्चा-लहसुन के अनेक लाभ 4
4. भारतीय संस्कृति का पुनीत प्रतीक दीपावली 5
5. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाभारत काल के के बाद संस्कृत व आर्यभाषा (हिन्दी) के सत्य-सनातन वैदिक धर्म के सर्वप्रथम प्रचारक थे 7
6. आतंकवाद के भयानक रूप 9
7. न दशहरे को रावण वध हुआ, न दीपावली को राजा रामचन्द्र सिंहासन पर बैठे 11
8. सद्गुणों तथा ईश्वरभक्ति से युक्त मानव का निर्माण वेदज्ञान से ही सम्भव 13
9. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 16

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन–उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

माता-पिता, आचार्य, समाज, सरकार ये वस्तुत: कृषक हैं जो मानवी शक्तियों को खींचकर बाहर लाते और मनुष्य को साधारण पशु से सुसंस्कृत, सुविकसित तथा कृष्टि बना देते हैं। आप जो आधुनिक विज्ञान का चमत्कार देख रहे हैं वह वस्तुत: मनुष्य जाति के विकास का चमत्कार है। जर्मनी, इंगलैण्ड, अमेरिका आदि देशों के बच्चों और अशिक्षित नीग्रो आदि के बच्चों में शारीरिक भेद तो नाममात्र है, भेद केवल कृष्टि या शिक्षा का है और परिणाम आगे चलकर कितना अधिक हो जाता है। एक देश के बच्चे आकाशमार्ग में उड़ने वाले अनेक प्रकार विभिन्न यान बना डालते हैं, दूसरे बच्चे एक सुई भी नहीं बना सकते।

इस प्रकार वेदमन्त्र में सबसे बड़ी शिक्षा यह दी गई है कि जुआरियों के समान अपने भोगों के लिए दैव के आश्रय न रहो! अपनी गुप्त शक्तियों को खींचकर बाहर लाओ। ये शक्तियाँ भोगों का साधन भी सम्पादित करेंगी और जीवन का विकास भी। जुआरी जुए से जीतकर भोग तो भोगता है परन्तु उन्नति नहीं करता और ऐसा भी नहीं है कि सर्वदा भोगों को भोगने में सफल ही हो जाए। यदि हम सृष्टि के नियमों का निरीक्षण करे तो ज्ञात होता है कि सफल जुआरी की अपेक्षा सफल कृषक की सफलता के उदाहरणों का अनुपात अधिक है। असफल किसान भी कुछ तो कमाता ही है। असफल जुआरी तो कहीं का नहीं रहता। यदि जुआरी ही जुआरी हों, तो जुआ खेलने वाले भी नष्ट हो जाएँ और जुआ भी। जुए से अन्न तो उत्पन्न नहीं होता। अब उन लाभों पर दृष्टि डालिए जो कृषक को प्राप्त हैं, जुआरी को नहीं। जुआरी का मान कौन करता है? उसने परिश्रम ही क्या किया? महाराज युधिष्ठिर जुए के कारण बदनाम हो गए। गीता में कृष्ण ने अर्जुन को यह उपदेश नहीं दिया कि जुआ खेल, स्यात तेरा गया हुआ राज्य फिर लौट आए वहाँ तो यही उपदेश है कि कर्म कर। दुनियाभर की सरकारें जुआरी और अपराधी समझती हैं और साथ ही उन लोगों को भी जो जुआरी के समान निठल्ले रहकर दैव के आश्रय बैठे रहते हैं।

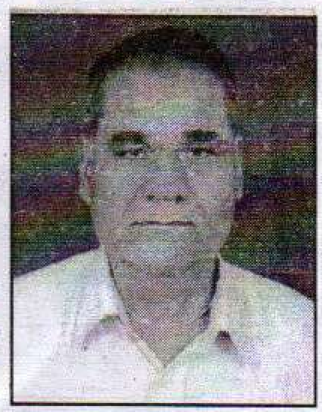

दूसरी चीज है **'वित्त'** या **'धन'**। कृषक धन पैदा करता है, जुआरी पैदा किये हुए धन को छीनता है। वह उत्पादक नहीं अपितु वंचक है, अभागा है वह जुआरी तो जुए में हार जाता है, परन्तु उससे भी अभागा है वह जुआरी जो जुए में जीत जाता है। भारत में दीप-मल्लिका के त्यौहार के साथ जुए की प्रथा का सम्बन्ध जोड़ देना महा अधर्म की बात है। यह लक्ष्मी-पूजा नहीं, लक्ष्मी-निन्दा है। धन का मुख्य साधन तो कृषि ही है।

तीसरा लाभ हैं **'गायें'**। गोधन सबसे बड़ा धन है, क्योंकि इससे कृषि भी होती है। गाय साधन भी है और साध्य भी। कृषि साध्य और साधन दोनों के लिए उपादेय है।

चौथा लाभ है **जाया**। जाया का अर्थ है बच्चों की माँ–**जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः।**

(मनु० 9.8)

अर्थात् स्त्री में मनुष्य अपने अनुरूप सन्तति को उत्पन्न करता है।

जुआरी की स्त्री और कृषक की स्त्री की तुलना कीजिए। कृषक की स्त्री तो अपने पति के साथ काम करके अपना भी विकास करती है और अपने अपने पति की उसके विकास में सहायक होती है। जुआरियों की स्त्री कभी सुखी नहीं रहती। इसका प्रसिद्ध उदाहरण है द्रोपदी। यों तो ऐसे उदाहरण हर स्थान पर मिलेंगे।

अन्त में मन्त्र कहता है कि सविता (प्रसविता) अर्थात् धर्म में प्रेरणा करने वाले प्रभु ने ऐसी ही आज्ञा दी है। जो इस आज्ञा का पालन करेगा उसका कल्याण होगा, जो उपेक्षा करेगा उसको दु:ख मिलेगा।

❑❑❑

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन–कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 6. कौन-से कर्म=ज्ञान विद्या के शत्रु हैं?

उत्तर-(1) सुनने की इच्छा का अभाव या सेवा का अभाव या गुरु की सेवा करना।

(2) शीघ्रता करना=प्रत्येक कार्य में उतावलापन करना।

(3) आत्मप्रशंसा=ये तीन विद्या के=ज्ञान के शत्रु हैं।

प्रश्न 7. विद्यार्थियों के कौन-से सात दोष माने गये हैं?

उत्तर-(1) आलस्य में पड़े रहना।

(2) मादक द्रव्यों का सेवन और घर-परिवार आदि में मोह व आसक्ति करना, अर्थात् मोह में फँसना।

(3) चंचलता=एकाग्रचित्त होना।

(4) व्यर्थ की बात में समय बिताना अर्थात् व्यर्थ गप्पे हांकना।

(5) उद्धतपना या बुद्धि की जड़ता।

(6) अभिमानी और लालची होना।

(7) त्यागवृत्ति का अभाव होना।

ये सात दोष विद्यार्थियों के माने गये हैं। अर्थात् इन दुर्गुणों से युक्त विद्यार्थी को विद्या प्राप्त नहीं होती।

प्रश्न 8. सुख चाहने वाले को क्या छोड़ना पड़ता है?

उत्तर-सुख चाहने वाले को विद्या छोड़नी पड़ती है अर्थात् जो सुख की चाहना करने वाला है (आलसी है, प्रमादी है) उसे विद्या की इच्छा नहीं करनी चाहिए अर्थात् सुखार्थी को विद्या कहाँ?

प्रश्न 9. विद्या चाहने वाले को क्या छोड़ना पड़ता है?

उत्तर-विद्या चाहनेव ाले को सुख छोड़ना पड़ता है, अर्थात् जो विद्या ग्रहण करना चाहता है, उसे आलस्य, प्रमाद जैसे सुखों को छोड़ना पड़ता है तभी विद्या आती है अर्थात् विद्यार्थी को सुख कहाँ?

प्रश्न 10. अग्नि, समुद्र, मृत्यु और स्त्रियाँ किससे तृप्त नहीं होतीं?

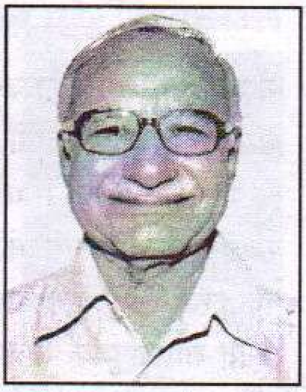

उत्तर-(1) अग्नि इंधन से तृप्त नहीं होती जितना इंधन डालो, अग्नि उतनी ही बढ़ती है अर्थात् अग्नि इंधन से शान्त नहीं होती।

(2) समुद्र नदियों के जल से तृप्त नहीं होता-उसमें बाढ़ नहीं आती अर्थात् समुद्र में नदियों द्वारा जितना भी जल डाला जाये वह तृप्त नहीं होता।

(3) मृत्यु सब प्राणियों को मारकर भी तृप्त नहीं होती। मृत्यु की सबको मारने की इच्छा सदैव बनी रहती है।

मेरे विचार में स्त्रियां अनेक पुरुषों से संभोग करके भी तृप्त नहीं होती। इस धारणा का उद्देश्य सम्भवत: दुराचारिणी स्त्रियों से लिया गया है। यहाँ यह भी जानना चाहिए कि कामी पुरुष भी स्त्रियों से तृप्त नहीं होता। तृप्ति तो काम को वश में करने से होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने एक पतिव्रत और एक पत्नीव्रत का विधान किया है। इससे काम की वृद्धि रुकती है और काम सुख भी प्राप्त होता है।

प्रश्न 11. किसी वस्तु की प्राप्ति की आशा किस चीज को नष्ट कर देती है?

उत्तर-किसी वस्तु की प्राप्ति की आशा धैर्य को नष्ट कर देती है, आशावान् व्यक्ति उस वस्तु को शीघ्र प्राप्त करना चाहता है।

प्रश्न 12. मृत्यु किसको नष्ट कर देती है?

उत्तर-मृत्यु समस्त ऐश्वर्य को नष्ट कर देती है, उससे वियुक्त कर देती है।

प्रश्न 13. दुष्टता=दुष्ट व्यवहार=कृपणता किस को नष्ट कर देती है?

उत्तर-दुष्टता=दुष्ट व्यवहार=कृपणता=कंजूसी यश को नष्ट कर देती है। जो व्यक्ति दुष्ट व्यवहार करता है उसका यश शीघ्र समाप्त हो जाता है, जो व्यक्ति कंजूस है उसको भी यश नहीं मिलता।

क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन के अनेक लाभ

गतांक से आगे....

अलील सल्फाइड कितनी चमत्कारपूर्ण रीति से मनुष्य के सारे शरीर में फैल जाता है, इसका अनुभव लेना हो तो इसकी दो चार कलियों को पीसकर उनकी लुगदी किसी के पैर की पगतली में बाँध देनी चाहिए। 15-20 मिनट के पश्चात् ही उस मनुष्य की श्वास को सूँघने से मालूम होता है कि लहसुन में रहने वाला अलील सल्फाइड नामक तत्त्व अति शीघ्रतापूर्वक पगतली की त्वचा के पर्दों में घुसकर और रक्तवाहिनी नसों के द्वारा सारे शरीर में फैलकर अंत में फेफड़ों में होता हुआ श्वासमार्ग के द्वारा बाहर निकलता है। इस प्रकार यह तत्त्व रस और रक्त के द्वारा फुफ्फुस, त्वचा, स्नायुजाल, यकृत्, मूत्रपिंड, हड्डियां वगैरह शरीर के प्रत्येक छोटे-बड़े भागों में प्रविष्ट हो जाता है। इसलिए अगर इसका उपयोग नियमित रूप से जारी रखा जाये तो शरीर के किसी भाग में रहने वाले ट्यूबरकल वेसिली नामक क्षय के कीटाणुओं को नष्ट करके सब प्रकार के क्षय के उपद्रवों को शान्त करता है।

क्षय के कीटाणुओं की वजह से होने वाली हर प्रकार की व्याधियों की अर्थात् फेफड़े के क्षय से लेकर चमड़ी के सड़न के समान विकट रोग भी सिर्फ लहसुन के उपयोग से अच्छा करने के दृष्टान्त उपरोक्त डॉक्टर अपने अनुभव से बतलाते हैं। वे एक और दस वर्ष के बच्चे का उदाहरण बतलाते हैं। इस बच्चे के हाथ की हड्डी में क्षय का रोग लग गया था जिससे उसके हाथ की एक उंगली भी काट डाली गई थी। फिर भी उसकी हथेली में तीन गहरे नासूर बड़े हुए थे जिनसे हमेशा पीप बहती रहती थी। उस रोग पर जब दूसरे सब उपाय असफल हो गए तब लहसुन की कुछ कलियों को पीसकर उनको चर्बी में मिलाकर 24 घण्टे में एक उस सड़े हुए हाथ के ऊपर बाँधा जाता था। चर्बी मिलाने का कारण लहसुन के दाहक असर को कम करना था। इस प्रकार चर्बी लिा देने पर भी प्रारम्भ में उस बच्चे को बहुत जलन सहन करनी पड़ी। लेकिन उसे बहुत शीघ्र फायदा दिखाई देने लगा और सब मिलाकर करीब डेढ़ महीने में उसका हाथ बिलकुल अच्छा हो गया।

यूरोप में सन् 1914 में जो भीषण युद्ध चला उसमें भी इस संबंध के कुछ अनुभव एक आर्मी सर्जन को हुए। उनका कहना है कि लहसुन के रस में थोड़ा गरम करके ठंडा किया हुआ पानी मिलाकर उस पानी को चाहे जैसे लेप लगे हुए घाव पर लगाने से अथवा उस पानी से उस घाव को धोने से अथवा उस पानी में तर करके कपड़े को उस घाव पर बाँधने से सड़ान उत्पन्न करने वाली चेपी कीटाणुओं का नाश होकर बहुत जल्दी घाव भर जाता है। चाहे कितने बड़े और हठीले घाव पर भी लहसुन का रस और पानी मंत्रशक्ति की तरह लाभ पहुँचाता है। उपर्युक्त आर्मी सर्जन ने यूरोप के सारे रणक्षेत्र में अपने इस अनुभव का प्रचार कर दिया था। उसने स्वीकार किया था कि यह आविष्कार मेरा स्वयं का नहीं बल्कि एक उच्च किसान की स्त्री का है जो युद्ध क्षेत्र के अन्दर घायलों के घावों को आश्चर्यजनक रीति से दुरुस्त करती हुई मेरे दृष्टिगोचर हुई थी। उसके पश्चात् मैंने भी अनेक रोगियों पर इसका अनुभव किया और पूर्ण विश्वास होने के पश्चात् ही मैं इस योग को दुनिया के लाभ के लिए प्रकाशित कर रहा हूँ।

लहसुन में सेंधा नमक अथवा शक्कर समान भाग मिलाकर उसे बारीक खरल करके अवलेह के समान बना लेना चाहिए। इस अवलेह में से छह माशा अवलेह, छह माशा जमे हुए घी के साथ मिलाकर हींग में तीन बार सवेरे, दोपहर और शाम को चाटने से पहली स्टेज का क्षय, मंदाग्नि, अजीर्ण, अफारा, उदरशूल, खाँसी, इन्फ्लूएंजा, नासूर, संधिवात, चीभे चलना इत्यादि रोग नष्ट हो जाते हैं। अगर उसका टिंक्चर बनाना हो तो लहसुन को पीसकर तीन-चार गुण रेक्टिफाइड स्पिरिट में डालकर तीन दिन पड़े रहने देना चाहिए। टिंक्चर की मात्रा दो ड्राम तक होती है।

'इंडियन एंड ईस्टर्न ड्रगिस्ट' नामक पत्र के मई 1922 के अंक में लहसुन के ऊपर एक नोट प्रकाशित हुआ था, वह इस प्रकार है-

क्रमशः अगले अंक में...

प्रकाश पर्व के अवसर पर—

भारतीय संस्कृति का पुनीत प्रतीक दीपावली

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, संपर्क-B-2, 92/7B, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब) मो० 9464064398

पर्व—आर्य-संस्कृति के संस्थापकों ने जनजीवन के विविध पहलुओं और स्वाभाविक प्रवृत्तियों का गहरा अध्ययन किया। अपने अध्ययन से सामाजिक जीवन में यदा-कदा उद्बुद्ध होने वाली निराशा, उदासीनता, विलगता एवं स्वार्थपरता की भावनाओं का अनुभव किया। इन भावनाओं को दूर करने के लिए विविध पर्वों द्वारा सामाजिक जीवन में आनन्द, उत्साह, एकता और सामाजिकता के रस का संचार किया। 'पर्व' शब्द प्रसन्नता, पूर्णता और गांठ (संगठन) अर्थ में प्रयुक्त होता है। पर्व शब्द की यह भावनाएँ समय-समय पर आने वाले विविध पर्वों से पूर्ण होती हैं, क्योंकि प्रकृति-नटी के नर्तन से आने वाली ऋतुओं और उनसे सम्बन्धित पर्वों से जहाँ मानव के स्वाभाविक सौन्दर्य-प्रेम की पूर्ति होती है, वहाँ महापुरुषों के जीवनों से सम्बन्धित पर्व हमारा ध्यान अपनी ओर विशेष आकर्षित करते हैं। इन पर्वों के विविध पहलुओं का विचार करने से ऋषियों की तत्त्वस्पर्शिनी, साक्षात्कारमयी विचार-पद्धति सामने आ जाती है। उन्हीं की विचार-चातुरी का परिणाम है कि कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से कामरूप तक भारत की चारों दिशाओं में एक साथ एक रूप में भारतीयों की हृदयतन्त्री और व्यवहार झंकृत हो उठते हैं। इन पर्वों द्वारा ही विविध धर्म, भाषा, प्रान्त और वर्ग-भेदमयी भारतीयता आज तक एक सूत्र में जीवित एवं जाग्रत है।

दीपमाला—भारतीय पर्वों में दीपावली का विशेष महत्त्व है, जो अनेक अर्थों में आज के भारतीयों और उनकी विविधता पूर्ण संस्कृति का परिचायक है। आज की भारतीय संस्कृति का यदि हम कोई प्रतीक या चित्र प्रस्तुत करना चाहें तो वह केवल विविध रूपों वाला दीपमाला का त्यौहार ही हो सकता है। इस पर्व के विविध रूपों और भारतीय जनजीवन या संस्कृति से अद्भुत सामञ्जस्य है, जो अन्यत्र मिलना सर्वथा दुर्लभ है।

दीपमाला के उल्लास में बालक नये-नये वस्त्र पहनकर सद्यः लिपे-पुते भवनों पर यज्ञाग्नि के रूप में टिमटिमाते दीपकों और मोमबत्तियों को जगाते हुए जहाँ दिखाई देते हैं, वहाँ ऋतु परिवर्तन के सन्देश को अनेकविधि अव्यक्त शब्दों में व्यक्त करते पटाखे तथा स्फुलिंग रूपी फूल बरसाती फुलझड़ियाँ यज्ञाग्नि में आहुत तिल आदि अन्न की याद को ताजा करती हैं। विविध प्रान्तों और वर्गों में दीपावली के प्रचलित

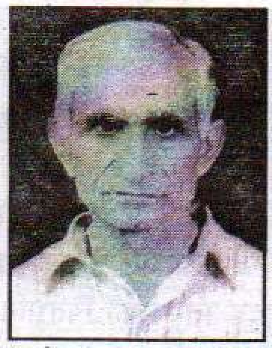

विभिन्न रूपों में कहीं काली और बलि के पूजन का प्रचलन है तो कहीं धन्वन्तरि एवं गोसंवर्द्धन के रूप में गोवंश का अर्चन है। एक तरफ श्रीराम, महावीर और विक्रम की स्मृति का दृश्य है तो दूसरी ओर गुरु हरगोविन्द, दयानन्द तथा रामतीर्थ के संस्मरण एवं शिक्षाएँ कर्णगोचर होती हैं।

कृषि-प्रधान भारत का कृषक अपनी चिराकांक्षित श्रावणी की फसल को अपने गृह पर अपने साथ प्राप्त कर तथा अपनी अनुषंगिणी प्रकृति सहचरीको नए रूप में देखकर हर्ष से उल्लसित हो उठता है। तब वह अपनी यज्ञप्रेमी संस्कृति के श्रौत एवं गृह्यसूत्रों के अनुसार व्यष्टि एवं समष्टि के रूप में नवसस्येष्टि (नए अन्न से सम्पादित यज्ञ) का सम्पादन कर अपने यज्ञीय जीवन को व्यावहारिक रूप देने में कृतसंकल्प होता है। यही नवसस्येष्टि आज के पवित्र पर्व का पुरातन रूप प्रतीत होता है। इसी प्रकार वणिक् भी गतवर्ष का लेखा-जोखा कर अपनी आय से आनन्दविभोर हो दीपमाला को विशेष यज्ञ के आयोजन के साथ नये वर्ष के लिए नयी बहियों का समारम्भ करते थे, जो आज भी गणेश और लक्ष्मीपूजन के साथ बहियों के श्रीगणेश में अनुवर्तित है अर्थात् नव अन्न या लक्ष्मी के गृह में आने पर वैश्यवर्ग का उत्साह और उल्लास इस पर्व के रूप में प्रकट होता है और वह इस खुशी में भजनों को संस्कृत कर नवागत का सत्कार करता है।

दीपावली के प्रारम्भ की कोई निश्चित तिथि निर्धारित करना अत्यन्त कठिन है, पुनरपि यह अति प्राचीन है। समय-समय पर इस पर्व के साथ भारतीय संस्कृति के अनेक अग्रदूतों की ऐतिहासिक और किंवदन्तीपूर्ण घटनाएँ

जुड़ गई हैं। अतः यह पर्व आज अनेक अवान्तर पर्वों से युक्त होने के कारण धनत्रयोदश से शुरू होकर भैयादूज तक चलता है।

प्रेरक पुरुष—एक बहुत बड़े वर्ग की मान्यता अनुसार पितृ-आज्ञा के अनुकूल दुष्कर तप वनवास को पूर्ण कर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी (ऐतिहासिक तिथि के मेल न खाने पर भी) आज ही अयोध्या पधारे थे। तब अयोध्या वासियों ने अपने हृदय आराध्य के आरती के रूप में अपने-अपने भवनों को अन्दर-बाहर से शोभायमान कर दीपों के प्रकाश से प्रकाशित किया था। भारतीय संस्कृति के सुदृढ़ स्तम्भ की पितृभक्ति की यह मृति आज भी जीवित और प्रचलित है। कुछ के विचार से आज भरत-मिलाप का स्मृति-दिवस है, अतः परस्पर मिष्ठान्न के आदान-प्रदान का प्रचलन है।

आयुर्वेद=शिरोमणि, शरीर विज्ञानवेत्ता तथा '**शरीरं रथमेव तु**' के सच्चे व्याख्याता महर्षि धन्वन्तरि की स्मृति भी चिरकाल से इसी पर्व के साथ जुड़ी हुई है। भारत के भूभाग में ऐसा विश्वास है कि इसी दिन योगिराज श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध कर भारत-भू से पाप, अत्याचार और अनाचार का भार हलका किया था। दैत्यवंशी राजा बलि की स्मारक बलि प्रतिपदा दीवाली के अगले दिन होने से इसी पर्व से सम्बन्धित की जाती है। जैन सम्प्रदाय के मान्य अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी की निर्वाण तिथि होने का सौभाग्य भी इसी दिन को प्राप्त है, तभी तो जैनधर्म के देवालय दीपावली की शोभा को संवर्धित करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। कुछ जनश्रुतियों के अनुसार विक्रमादित्य के राज्याभिषेक तथा शकविजय का दिवस भी यही है।

जन-जन को मातृवत् अमृतमय दुग्धपायिनी तथा कृषि की प्रतिनिधि गौ की महिमा का बोधक गोपाष्टमी का पर्व भी इसी पर्व के साथ भारतीय संस्कृति के स्वरूप का दिग्दर्शन और स्मरण करा रहा है। सिख धर्म के छठे गुरु हरगोविन्द जहाँगीर के कृष्ण-मन्दिर (जेल) से मुक्त होने के बाद आज के दिन ही स्वर्ण-मन्दिर (अमृतसर) में पधारे थे। चिर प्रतीक्षा के पश्चात् अपने पथ-प्रदर्शक को अपने मध्य में प्राप्त कर और उनके दर्शनों के उल्लास से उल्लसित शिष्यगण के हृदय का प्रतिरूप विविध दीपों से झिलमिलाता स्वर्ण-मन्दिर का सरोवर तथा गुरुवाणी का अखण्डपाठ एवं गुणानुवचन आज भी उस स्मृति को नयनाभिराम करा रहा है।

सामाजिक और वैयक्तिक जीवन को समुज्ज्वल बनाने वाले, विविध विचार दीपों की दीप्ति से प्रदीप्त, भारतीय नवजागरण के अग्रदूत, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस होने का सौभाग्य भी इसी भारतीय संस्कृति के प्रतीक को ही प्राप्त है, जिनकी विचार और कार्य पद्धति से प्रभावित होकर देश-विदेश के गणमान्य विचारकों ने विविध प्रकार की भावभीनी श्रद्धाञ्जलियाँ प्रस्तुत करते हुए महर्षि को एकमात्र ईश्वर के उपासक, भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धारक, समाज-सुधारक, वेदोद्धारक, नारी-शिक्षा, राष्ट्रीय एकता की सूत्रमयी हिन्दी के प्रसारक, स्वाधीनता के प्रथम मूलमन्त्र प्रदाता एवं नारी-विधवा-अनाथ-गौ-अछूत के उद्धारक आदि रूपों में स्मरण किया है।

भारतीय महापुरुषों में ऋषि दयानन्द दो कारणों से हमारे अति निकट आ जाते हैं। प्रथम तो उन्होंने हमारी विविध क्षेत्रों की आधुनिक समस्याओं का अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में हमारे ही हित को प्रमुख रखकर आज की दृष्टि से समाधान किया। महर्षि दयानन्द की दूसरी सर्वातिशयी विशेषता यह है कि वे हमें एक आग्रह से आबद्ध होने की भावना नहीं देते, अपितु असत्य का त्याग कर युक्तिसिद्ध, तर्कानुमोदित, प्रमाण प्रतिपादित सत्य के ग्रहण के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जो आज के प्रगतिशील वैज्ञानिक युग में प्रगति का एकमात्र अवलम्बन कहा जा सकता है। दीपमाला के अमर सन्देश के अनुसार महर्षि दयानन्द ने भी कहा था-"अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।" अर्थात् हर प्रकार के अज्ञान और तम के मार्ग को छोड़कर ज्ञान तथा प्रकाश के पथ का सहर्ष अनुसरण करना चाहिए।

इतना ही नहीं, अद्वैत ब्रह्म के व्यावहारिक व्याख्याता, समग्र भारत को अपना शरीर मानने की शिक्षा देने और दरिद्र नारायण की पूजा सिखाने वाले स्वामी रामतीर्थ के जन्म तथा जल-समाधि का पवित्र दिवस होने की अहोभाग्य भी इसी पुण्य पर्व को प्राप्त हुआ है।

सारांश—दीपमाला के इन विविध स्वरूपों का विवेचन करने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह पर्व भारतीय संस्कृति के कुछ विशेष सन्देश देता है। **शेष पृष्ठ 12 पर....**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाभारत काल के बाद संस्कृत व आर्यभाषा (हिन्दी) के व सत्य सनातन वैदिक धर्म के सर्वप्रथम प्रचारक थे

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

अट्ठारवीं शताब्दी में भारतवर्ष की सदियों की गुलामी से नवचेतना जगाने वाले युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उस अंधेरे युग में भी भारत की मात्र भाषा संस्कृत एवं आम बोलचाल की भाषा आर्यभाषा कहा था। क्योंकि वह कहते थे, भारत की प्राचीन आर्ष व अनार्ष शास्त्रों में हिन्दू शब्द कहीं नहीं मिलता है। वह हिन्दू शब्द को फारसी भाषा में चोर, गुलाम आदि का प्रचलन कहते थे। इसलिए उन्होंने अपने सम्पूर्ण साहित्य में संस्कृत व आर्यभाषा का सम्बोधन प्रचलन किया था।

वर्ष 1918 में महात्मा गांधी जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने को कहा था तथा वर्ष 1949 की 14 सितम्बर को भारतीय संविधान के भाग 17 अध्याय की धारा 343 में वर्णित है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। इसलिए 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। जब गैर हिन्दी भाषी राज्य में हिन्दी का विरोध होने लगा तो अंग्रेजी को भी राज भाषा का दर्जा देना पड़ा।

भारत में अधिकांश लोग बातचीत हिन्दी में करते हैं। बचपन से ही हमें अपने घरों में हिन्दी भाषा का ज्ञान दिया जाता है और हिन्दी दुनिया में सबसे ज्यादा बोलने वाली भाषा है। हिन्दी भाषा कई दूसरे देशों में भी बोली जाती है, जैसे पाकिस्तान, नेपाल, मॉरीशस, बंगलादेश, सूरीनाम इत्यादि। हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जिसे करोड़ों लोग मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं।

भले ही आज इंग्लिश भाषा का ज्ञान होना जरूरी है, लेकिन सफलता पाने के लिये हमें अपनी राजभाषा हिन्दी को कभी नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि हमारे देश की भाषा व हमारी संस्कृति हमारे लिये बहुत मायने रखती है।

हिन्दी दिवस देश की धरोहर होती है, जिस तरह हम तिरंगे झण्डे को सम्मान देते हैं, उसी तरह हमें हमारी राजभाषा हिन्दी को भी सम्मान देना चाहिये। हम जब तक इस बात को स्वीकार नहीं करते, तब तक दूसरों को भी हिन्दी के प्रति श्रद्धा की ओर ध्यान नहीं दिला सकते हैं।

हिन्दी हमारे भारत देश की मातृभाषा है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम हिन्दी भाषी है। हमारे देश की राजभाषा का सम्मान करना हम नागरिकों का परम कर्त्तव्य हैं। हम भारतवासियों का धर्म मत विभिन्नता के कारण होते हुए भी हमारी मातृभाषा हिन्दी हमें एकता के सूत्र में पिरोती है।

हिन्दी दिवस एक ऐसा अवसर है, जहां हम प्रत्येक भारतीयों के दिलों में हिन्दी भाषा का महत्त्व पहुंचा सकते हैं। ऐसे समारोहों से भारतीय युवाओं के दिलों में हिन्दी भाषा का प्रभाव पड़ेगा और वह सामान्य वार्तालाप में हिन्दी का उपयोग करने लगेंगे। शिक्षित वर्ग आपसी वार्तालाप में अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं, वह ठीक नहीं है। हमें भारत में अपने परिवारों में दैनिक बोलचाल हिन्दी में ही करनी चाहिए।

कई हिन्दीप्रेमी सज्जनों का मानना है कि हिन्दी दिवस केवल सरकारी कार्य की तरह है जिसे केवल एक दिन मनाया जाता है। इससे हिन्दी भाषा का कोई विकास नहीं होने वाला है, कई लोग हिन्दी दिवस समारोह में भी अंग्रेजी का उपयोग करते हैं। यह भी हिन्दी भाषा का अपमान है।

किसी भी प्रगतिशील देश की राजभाषा वहां के नागरिकों के साथ-साथ हमेशा तेजी से बढ़ती है, क्योंकि यह जानते हैं किसी भी बाहरी देश में उनकी राजभाषा और संस्कृति उनकी पहचान बनाने वाली होती है, इसलिए हिन्दी भाषा हमारी प्राचीन इतिहास को उजागर करती है, वही हमारी पहचान है।

हिन्दी भाषा दुनिया में सबसे ज्यादा बोलने वाली चौथी भाषा है, लेकिन शुद्ध रूप से पढ़ने और बोलने वालों की

संख्या दिनोदिन घटती जा रही है और हिन्दी भाषा पर अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रभाव पड़ा हुआ है। कई हिन्दी शब्द प्रचलन से हट रहे हैं और अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। इससे भविष्य में हिन्दी भाषा के विलुप्त होने की सम्भावना पर भी सोचना अति आवश्यक है। इसलिये राष्ट्रप्रेमियों को एकजुट होकर अपनी हिन्दी मातृभाषा के लिये तीव्र आन्दोलन एक स्वर में बहुतायत से करना होगा।

हिन्दी विकास मंच हिन्दी को प्रोत्साहन देने वाली एक संस्था है। हम अब जानते हैं कि हिन्दी विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। स्वतन्त्रता के 77 वर्ष बाद भी हिन्दी का अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है। हिन्दी जैसी सम्मानित और वैज्ञानिक भाषा को यथोचित सम्मान दिलाना समय की मांग है। हिन्दी विकास मंच का उद्देश्य हिन्दी भाषा व साहित्य को रुचिकर बनाने तथा भारत की बोलियों में लोकप्रिय क्षेत्रीय भाषाओं और अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं से समन्वय स्थापित करना है तथा भारत में हिन्दी में साक्षरता वृद्धि के लिये शैक्षिक अभियान आयोजित करना भी है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का मंच आर्यसमाज के नेतृत्व को प्रत्येक वर्ष सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी प्रोत्साहन दिवस मनाना चाहिए। प्रत्येक विद्यालयों में प्रतियोगिता रखनी चाहिए, जैसे विचार-गोष्ठी, काव्य-गोष्ठी, श्रुतिलेखन, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, पुरस्कार समारोह, हिन्दी राजभाषा सप्ताह आदि आयोजनों में आर्यसमाज संस्थाओं को एकरूपता कार्यक्रम में आगे आना होगा।

आर्यसमाज एक राष्ट्रीय उत्थान संगठन भी है और मेरी समझ में आर्यसमाज सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी (आर्यभाषा) का सर्वाधिक प्रयोग करता है। आर्यसमाज द्वारा संचालित गुरुकुल, संस्थाएं संस्कृत व हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग करते हैं। आइए हम सभी संकल्प लें कि हिन्दी (आर्यभाषा व संस्कृत भाषा की वृद्धि के लिये आगे बढ़कर कार्य करेंगे।

आर्यों का पंजाब हिन्दी सत्याग्रह का स्मरण–30 मई, 1857 के काल से 1950 तक हजारों आर्यों ने पंजाब सरकार के विरुद्ध विशाल सत्याग्रह किया। कारण, पंजाब सरकार ने सारे पंजाब में गुरुमुखी लिपि थोप दी थी, जिसका सर्वप्रथम हरियाणा के आर्यों ने विरोध किया और लाखों लोगों के हस्ताक्षर करा करके पंजाब व दिल्ली सरकार के पास भेजा गया। हिंदी सत्याग्रह में पंजाब सरकार ने सत्याग्रहियों पर भीषण अत्याचार किये। पचासों आर्यों का बलिदान हुआ था। फलस्वरूप पंजाब सरकार विशाल आन्दोलन से डर गयी थी और पंजाब में गुरुमुखी लिपि के आदेश को वापिस लेना पड़ा। इसके प्रभाव से सारे भारत में हिन्दी भाषा के प्रति जनता की श्रद्धा बढ़ी थी। अत: आर्यों को व आर्य नेतृत्वों को हिन्दी भाषा के प्रति निरन्तर आन्दोलन करना चाहिए।

(सत्य सनातन वैदिक धर्म) या अधूरा वाक्य सनातन धर्म का सच–सनातन धर्म का प्रचलित प्राक्कथन भारत में महाभारत काल के बाद वैदिक धर्म व वैदिक संस्थाओं के हनन होने के कारण पुराण युग का प्रारम्भ हुआ और जनता वेदों को और वैदिक धर्म को भूलने लगी और जनता पुराणों के ग्रन्थों को ही सनातन धर्म मानने लगी, परिणामस्वरूप भारतवर्ष में अंधेरे युग का प्रारम्भ हुआ और भारत पराधीन होता चला गया। सनातन वाक्य का अर्थ है जिसका आदि न अन्त है जो सदैव सर्वकाल सार्वभौम है। किन्तु इस वाक्य से स्पष्ट नहीं होता है कि सनातन धर्म कौनसा है। वास्तव में सृष्टि प्रारम्भ में ईश्वर द्वारा वैदिक संविधान वेदों द्वारा मानव मात्र की सार्वभौम उन्नति के लिये प्रदत्त किया है, जिससे सत्य सनातन वैदिक धर्म अपने आप में पूर्ण वाक्य है। आजकल सनातन धर्म को मिटाने की चर्चा हो रही है। वास्तव में सत्य सनातन वैदिक धर्म कभी नहीं मिट सकता है–इसको मिटाने वाले एक दिन ईश्वरीय व्यवस्था में स्वयं ही मिट जायेंगे।

संपर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क–मो० 08901387993

आतंकवाद के भयानक रूप

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

प्रिय पाठकवृन्द! आज सारा संसार आतंकवाद या उग्रवाद से पीड़ित है। फ्रांस, अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे हैं। एक मजहब विशेष के लोगों द्वारा किसी भी देश के लोगों को केवल इसलिए मार दिया जाता है, क्योंकि वे उनसे अलग पूजा-पद्धति व रहन-सहन को मानते हैं। इस प्रकार मजहब व अल्लाह के नाम पर होने वाली क्रूरता से संसार आतंकित है और इसके खात्मे के लिए प्रयासरत भी है। यह तो इसका स्थूल रूप है और यह आज ही पैदा नहीं हुआ है। रामायण, महाभारत में वर्णित रावण, दुर्योधन आदि इसी भावना के प्रतीक तो हैं। इसीलिए क्षात्रधर्म की अनिवार्यता बताई गई है, जो अन्याय व अत्याचार को मिटा सके। आध्यात्मिक ग्रन्थों में मन के बुरे विचार ही आतंकवादी हैं, जिनसे प्रेरित हुआ मनुष्य दूसरों को हानि पहुँचाकर अपना आत्मिक पतन कर लेता है। पूज्यपाद आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी ने आतंकवाद की व्यापक परिभाषा देते हुए '**समस्या-समाधान**' पुस्तक में लिखा है-

"समाज, परिवार, राष्ट्र और विश्व में शान्तिपूर्वक, प्रेमपूर्वक, सद्भावनापूर्वक सभी व्यक्तियों को जीने का अधिकार है। सभी को इस पृथ्वी के ऊपर खाने-पीने का अधिकार है, पढ़ने का अधिकार है, संसार के पदार्थों को भोगने का अधिकार है। सभी को अपने विकास का, उन्नति का या प्रगति का अधिकार है। उस अधिकार को अन्यायपूर्वक, भयपूर्वक, त्रासपूर्वक रोकना, रोकने का प्रयास करना उग्रवाद, अतिवाद या आतंकवाद है।"

कोई भी व्यक्ति परिवार, संस्था, समाज या राष्ट्र के किसी भी क्षेत्र में रहता हुआ, जब केवल स्वार्थ (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि) की पूर्तिके लिए दूसरों से अन्याय, पक्षपात व हिंसा आदि का व्यवहार करता है, तो यह आतंकवाद कहलाता है। कई बार आतंकवाद से आतंकवाद पैदा होता है, क्योंकि क्रिया की प्रतिक्रिया तो होती ही है। जैसे ब्राह्मण आदि जाति अभिमानियों ने शूद्रों (दलितों) को उनके पढ़ने-लिखने व सम्मान से जीने के अधिकारों से वंचित रखा, तो पेरियर व डॉ० अम्बेडकर ब्राह्मणों (संस्कृत) के ग्रन्थों को घृणित बताकर जलाना शुरू कर दिया। उनके अनुयायी अब हिन्दूविरोधी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। आतंकवाद सदा ही मानवता का शत्रु रहा है, वह चाहे क्रिया से उत्पन्न हुआ हो या प्रतिक्रिया से। आचार्यश्री के अनुसार इस क्रिया और प्रतिक्रिया के मूल में होती है नास्तिकता व अविद्या। कर्मफल व ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न जानकर मनमानी कल्पना करने वाले लोग भी आस्तिक नहीं हैं। क्योंकि ऐसे लोग कभी भी मनमाने ईश्वर (खुदा) को खुश कर काल्पनिक स्वर्ग के आनन्द (भौतिक सुख) पाने के लिए किसी पर भी अत्याचार कर सकते हैं। यज्ञों में पशुबलि, मूर्तियों पर बलि (नरबलि भी), जेहाद के नाम पर मुस्लिमेतर लोगों को कत्लेआम, बकरीद पर लाखों जीवों की हत्या आदि करने वाले भी स्वयं को आस्तिक व धार्मिक मानते हैं, तो फिर पापी कौन होगा?

1921 ई० में हुए मोपला दंगे के बाद 1923 ई० में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पञ्जाब, लाहौर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'मालाबार और आर्यसमाज' में पृष्ठ 19 पर लिखा है कि अन्तिम हैदर और सुलतान टीपू का समय भी आ पहुँचा। इन दोनों ने मालाबार में राज्य स्थापित करना चाहा और लोगों को भयभीत करने के लिए घोर से घोर अत्याचार किये। सुलतान टीपू के अत्याचारों के विषय में जो उसने मालाबार के भीतर सन् 1990 ई० में किये, कहा जाता है कि-

"मालाबारी लोगों के साथ उसका व्यवहार महापैशाचिक था, कालीकट में माताओं को फांसी पर लटकाया गया, बच्चों की गर्दनें मरोड़ी गईं, ईसाई और हिन्दुओं को नग्न करके हाथी के पांव के साथ बांधकर उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये, समस्त गिरजे और मन्दिर उसने नष्ट कर दिये और स्त्रियों को जबरदस्ती यवनों को

सौंप दिया। उस समय मन्दिर, मस्जिद बनाए गए और इस समय भी इस प्रकार की मस्जिदें दिखाई देती हैं जो पहिले मन्दिर थे।''

इस (1852 ई०) मोपला विद्रोह में जब कुछ मोपले सरकारी सेना से मारे जा चुके थे, तो उसी दिन सायंकालको चैम्बर शेरी का थंगल मस्जिद में बैठा हुआ आकाश की ओर देख रहा था और हँस रहा था। पास बैठे हुए मोपलों ने पूछा-''हजरत, आप किस बात पर हँसते हैं।'' उसने उत्तर दिया-''तुम्हारे सुनने के योग्य यह बात नहीं है।'' मोपलों ने हठ किया कि ''हजरत, हमें अवश्य बताइये।'' वह उसी प्रकार आकाश की ओर मुख किये हँसता रहा। अन्त में बड़ी देर के पीछे उसने कहा-''मैं देखता हूँ कि आकाश में बिहिश्त की खिड़कियाँ खुल गई हैं और उनमें से हूरें निकल-निकलकर उन मोपलों का स्वागत कर रही हैं जो आज प्रात: शहीद हुए थे।''

यह सुनकर मोपलों ने पूछा-''हजरत, हमें यह दिन कब नसीब होगा?'' उसने उत्तर दिया-''वह दिन तो आया हुआ है, तुम लोग तो गाफिल पड़े हुए हो, जानते नहीं हो कि गोरखों का कैम्प लगा हुआ है। जाओ, हमला करो, और शहीद हो जाओ।'' इस पर 500 मोपले तैयार हुए। उन्होंने हमला किया और कट-कटकर मर गये।

19 अगस्त 1921 को आरम्भ हुए मोपला दंगे के विषय में लिखा है-बाग़ी मोपलों ने पहले सब हिन्दुओं से तलवारें, बन्दूकें और दूसरे हथियार छीन लिये। फिर हिन्दू मन्दिरों की तलवारें और छुरियाँ भी इकट्ठी कीं। उसके पीछे हिन्दुओं से चावल और धन वसूल किया। फिर उनसे कहा कि या तो मुसलमान बनो या अपने प्राण दे दो। इसके साथ ही हिन्दू-स्त्रियों का सतीत्व भ्रष्ट किया, उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाकर मुसलमानों के साथ विवाह कर दिया। छोटे-छोटे बच्चों को उनके माता-पिता के देखते-देखते निर्दयता से कतल कर दिया और स्त्रियों के पेट फाड़ डाले और इसी प्रकार से पैशाचिक अत्याचार किये जिसको स्मरण करके शरीर में रोमांच हो जाता है।

आर्यसमाज ने वहाँ शुद्धि व पीड़ित हिन्दुओं की सहायता का कार्य आरम्भ किया तो लाला खुशहालचन्द खुरसन्द (महात्मा आनन्द स्वामी जी) महात्मा हंसराज जी के आदेश से मालाबार जा पहुँचे। वे लिखते हैं-पहिले मैं अकेला ही कालीकट से पूर्व की ओर 20 मील पैदल चल चुकने के पश्चात् पुत्तूर ऐमशम में पहुँचा। यह वही परगना है, जहाँ हिन्दुओं की लाशों से तीन कुएं भरे गये थे। ....यह सारा परगना बर्बाद हुआ है। सब हिन्दू घर जले हुए दिखाई दिये। ....एक कूप इस घर से फरलांग के फासले पर था। जो हिन्दू मुसलमान होने से इंकार करते थे, उनको इस कूप पर लाया जाता था, जब मैं इस कूप के पास पहुंचा तो मैंने देखा कि कुएं में उन धर्म्म के लिए मरने वालों की लाशें मौजूद नहीं हैं, बल्कि खोपड़ियां हैं, पिंजर हैं, टांगों और भुजाओं की हड्डियाँ हैं। जब मैंने इन चीजों को देखा तो मेरा रोमांच हो गया। ....मैं वहाँ से हटकर दूसरे कूप की ओर जो इस कूप से दो फरलांग की दूरी पर होगा, गया। यह वही कूप है जिसमें से एक हिन्दू नायर बचकर निकल आया था और उसने हिन्दुओं के भीषण हत्याकांड की कहानी सुनाई थी। जो बातें उसने बयान की थीं उन्हें सर्वथा सत्य पाया। यह कुआं भी मनुष्यों की हड्डियों से आधा भरा हुआ था।''

पिछले वर्ष नेपाल में भूकम्प आया, तो आर्यसमाज की तरफ से भी सहायता सामग्री ले जाई गई। परोपकारिणी सभा अजमेर से आचार्य कर्मवीर जी भी नेपाल गये थे। उन्होंने वहाँ देखे, दो मन्दिरों (धार्मिक बूचड़खानों) के विषय में लिखा है-''21 मई 2025 को हम लोग प्रसिद्ध दक्षिण काली का मन्दिर देखने गये, ...ये कोई उपासना स्थल नहीं था, ये तो एक प्रकार का धार्मिक बूचड़खाना था, जहाँ पर सुबह से शाम तक सैकड़ों निरीह-निर्बल पशु-पक्षियों, बकरे-मुर्गे इत्यादि प्राणियों का संहार (हत्या) धर्म के नाम पर किया जाता है। ....नेपाल के तराई के क्षेत्र में बिहार की सीमा से लगता हुआ एक स्थान है, जहाँ पर एक गढ़ी माता का मन्दिर है, इस स्थान पर चार वर्ष में एक विशेष मेला लगता है, जहाँ पर कई एकड़ भूमि में कई लाख पशुओं की सामूहिक बलि दी जाती है। इस वर्ष भी लगभग पांच लाख कटड़-भैंसों की बलि दी गई। पांच लाख की सख्या तब रही जब भारत सरकार ने सीमा पर प्रतिबन्ध लगाया कि इस बलि के लिए भारत से पशुओं को न जो दिया जाए।''

क्रमश: अगले अंक में....

न दशहरे को रावण वध हुआ, न दीपावली को राजा श्री रामचन्द्र सिंहासन पर बैठे

❑ महावीर धीर शास्त्री, प्रेमनगर, हैफेड रोड, रोहतक-9466565162

रोहतक निवासी राजू रावण-वाला प्रतिवर्ष रावण के पुतले बनाकर अनेक जिलों में भेजता है। वह कहता है कि भले ही मैं पुतले बनाता हूं और मुझे यह भी पता है कि ये जलाए जाएंगे, लेकिन जब पुतले जलते हैं तब मुझे दुःख होता है कि कितने परिश्रम से पुतले बनाए थे, वे जला दिए गए।

रावण के पुतले जलाने का विधान कहीं नहीं है–किसी भी धर्मशास्त्र या इतिहास पुस्तक में नहीं लिखा कि रावण के पुतले जलाने चाहिएं। नव ऋतु के समय शरीर और प्रकृति का शोधन करने के लिए वैदिक काल से ही नवरात्र के दश दिनों तक सात्विक सुपाच्य भोजन, विशेष नियमित यज्ञ योग और विद्वानों के उपदेश सुनने की परम्परा रही है। यही प्रक्रिया चैत्र में ऋतु परिवर्तन के समय नवरात्र की होती है।

आश्विन के नवरात्रों में श्री राजा रामचन्द्र जी की विजय के बाद अन्य उपदेशों के साथ राजा रामचन्द्र की विजय गाथाओं का वर्णन भी नवरात्रों में होने लगा जिसे आज रामलीला कहा जाता है। नवरात्र कहने को नवरात्र हैं, लेकिन ये दशवें दिन पूर्ण होते हैं। इसका नाम इसीलिए दशहरा है कि इन दश दिनों में मनुष्य दशों इन्द्रियों की बुराइयों का अभ्यास के द्वारा शमन या हरण करता है और मनुष्य के शरीर में विद्यमान अष्टचक्रों को भेदकर नवद्वारों का शोधन करता है।

इस समय वर्षा ऋतु समाप्त हो जाती है। दशवें दिन सैनिक भी शस्त्रास्त्रों के संचालन का अभ्यास करके दशों दिशाओं में दुष्टों का दमन करने के लिए प्रस्थान करते थे। इसलिए दश इन्द्रियों और दशों दिशाओं की बुराई हरण या दूर करने का नाम दशहरा उचित ही है।

रावण के पुतले क्यों जलाये जाने लगे?–दशहरे के दशों दिन सैनिक शस्त्र संचालन करते थे। राजा राम की विजय के बाद सैनिक रावण का पुतला बनाकर लक्ष्यभेदन का अभ्यास करने लगे थे। धीरे-धीरे सभी जगह रावण के पुतलों पर निशानेबाजी का अभ्यास होने लगा। बच्चे भी दशहरे के दिन रावण के पुतलों को लक्ष्य करके लक्ष्यभेदन करने लगे और उसे जलाने लगे। यही परम्परा देश में

फैलती रही। लेकिन दशहरे पर रावण दहन और रामलीला की परम्पराएं यथावत् चलती रही। लोगों के मन में यह भ्रम जम गया कि दशहरे को ही रावण मारा गया था, इसलिए ही उसे इस दिन जलाया जाता है। दशहरा का भाव लोगों ने यह निकाल लिया कि दश सिर वाले रावण का प्राणहरण इसी दिन हुआ था, इसीलिए इस दिन का नाम दशहरा है जबकि रामायण के अनुसार यह स्पष्ट है कि श्रीरामचन्द्र जी ने चैत्र में रावण वध किया था और वैशाख में वे सिंहासन पर बैठे थे। रामचरितमानस में लिखा है कि–

चैत शुक्ल चौदस जब आई। मरयो दशानन जग दुःखदायी॥

आज रावण के पुतले बनाकर जलाना उचित नहीं है। लाखों टन लकड़ी व्यर्थ जलाकर प्रदूषण फैलाना कहां की बुद्धिमत्ता है? व्यापारियों ने शुभ त्यौहारों पर पटाखे बनाकर त्यौहारों को विकृत कर दिया है। मेरा यह शुभ कार्यों का स्वस्तिक चक्र नित्य अबाध गति से चलता रहे लेकिन व्यापारियों के बनाए पटाखे आज प्रदूषण और मौत दे रहे हैं। हर वस्तु में मिलावट है।

श्री रामचन्द्र जी दिवाली के दिन सिंहासन पर नहीं बैठे थे, दिवाली ऋतु परिवर्तन, साफ सफाई, वातावरण शोधन और नई फसलों का त्यौहार है–महाराजा रामचन्द्र चैत्र में रावण वध करके वैशाख में सिंहासन पर बैठे थे। आश्विन में नहीं। प्रश्न पैदा होता है फिर दिवाली क्यों मनाई जाती है? नवरात्र पर शरीर शोधन और आत्म शोधन करने

के बाद घरों और वातावरण शोधन करने के लिए दिवाली का त्यौहार है। सभी व्यक्ति वर्षा ऋतु में घरों में आई शीलन और कीटाणुओं को दूर करने के लिए घरों की सफाई करते हैं। दीवारों और खिड़की दरवाजों पर सफेदी और रंग-रोगन आदि कराते हैं। दिवाली के दिन वातावरण के कीटाणुओं को मारने के लिए चप्पे-चप्पे पर दीपक लगाए जाते हैं। घर में, प्रत्येक खिड़की दरवाजे पर, छत पर, गली में, हल और गाड़ी पर कुएं पर, मोरी पर, मंदिर, धर्मशाला में, सभी जगह के कीटाणु प्रकाश में आकर तथा दूसरे घी और सरसों के तेल की गैस से मर जाते हैं। श्री रामचन्द्र जी से बहुत पहले से ही वैदिक सभ्यता में दशहरा और दिवाली के त्यौहार मनाने की परम्परा चली आ रही है। हां! श्रीराम की विजय के बाद ये त्यौहार और अधिक उमंग से मनाए जाने लगे।

सर्दी में प्रयोग के लिए नई फसल आती है–वेदों में दिवाली और होली को नवसस्येष्टि अर्थात् नई फसल का उत्सव कहा गया है। इस समय धान, गन्ना, तिल, कपास आदि की नई फसलें आती हैं जो सर्दी से बचाव के लिए उपयुक्त हैं। इसीलिए दिवाली पर धान की मीठी फिकी खील, अनेक प्रकार की मिठाइयां, पतासे, मीठे खिलौने, तिल और गुड़ से बनी अनेक प्रकार की रेवड़ियां, गज्जक आदि, कपास से रजाइयां, खेस आदि सर्दी से बचाव के लिए तैयार की जाती हैं।

इस प्रकार से दिवाली ऋतु परिवर्तन पर वातावरण शोधन, घर शोधन तथा नए अन्न-धन का उत्सव है। इसका श्री राजा रामचन्द्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। दिवाली प्रदूषण मुक्ति का पर्व है। बम पटाखों से प्रदूषण और मौत देने का त्यौहार नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय पटाखों पर प्रतिबन्ध लगाता है तो कुछ बाहरी रूप से ही मात्र धर्म का चोला पहने अज्ञानी भाई कहते हैं कि हमारे धर्म में बाधा डालने वाला सर्वोच्च न्यायालय कौन होता है? हम चाहे पटाखे चलाएं, चाहे नहरों में पूजा सामग्री और मूर्तियां प्रवाहित करें, चाहे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर हांडी फोड़ें। यह हमारी आस्था है। यह हमारा धर्म है। आज चाहे होली दिवाली हो या विवाह, जन्मदिन हो या खेल और चुनावी विजय हो, सभी अवसरों पर पटाखे चलाए जाते हैं।

भारतीय संस्कृति का पुनीत... पृष्ठ 6 का शेष...

प्रथम–भारतीय जन-जन में यह धारणा है कि मलिन और अन्धकारयुक्त गृह में लक्ष्मी पदार्पण तथा निवास नहीं करती, जो भारतीय संस्कृति की ईमानदारी (व्यवहार-शुचिता) और परिश्रम से धनार्जन की भावना का द्योतक है। अत एव मनुस्मृति (5.105) में निर्देश है कि-

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परमं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारि शुचिः शुचिः॥

सब प्रकार की पवित्रताओं में से धन (कमाई) की पवित्रता सर्वोत्तम है। जो पवित्र ढंग से पवित्र धन का संचय करता है वही वास्तव में पवित्र एवं शुद्ध है। जल आदि से शुद्ध व्यक्ति शुद्ध कहलाने का अधिकारी नहीं है। अत एव इस पर्व पर भवानों की सफाई और सफेदी कर रात को विविध प्रकाशों से प्रकाशित करते हैं और अगले दिन ब्राह्ममुहूर्त में घर के दलिद्दर को जलते हुए दीपक के साथ बाहर रखा जाता है, जो जीवन से दरिद्रता को हटाकर सत्यं, शिवं, सुन्दरं के ग्रहण की प्रेरणा देता है।

द्वितीय–स्वच्छ भवनों पर जगमगाते दीपक के सहयोग से अमावस्या की घोर तमिस्रा को हटाते हुए भारतीय संस्कृति की "**तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय, असतो मा सद्गमय, तेजोऽसि तेजो मयि धेहि**" इत्यादि सुधास्यन्दिनी सूक्तियों को जहाँ स्मरण कराते हैं, वहाँ अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अन्धकारमय कर्म के स्थान पर प्रकाशयुक्त (बुद्धिसंगत) कार्यों के सम्पादन का सन्देश देते हैं। अत एव इस पर्व को प्रकाश या ज्योति का पर्व कहते हैं। वेद, बाइबिल, कुरान और गुरुग्रन्थ आदि सभी धर्मग्रन्थ एक स्वर से प्रकाश की प्रशंसा करते हैं। वस्तुतः यह बच्चों का मनभाता, कृषकों और व्यापारियों का प्रियतम पर्व है, वहाँ बुराई पर अच्छाई की, अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की, पाप पर पुण्य की, मृत्यु पर जीवन की और अन्धकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। वस्तुतः **अन्धकार**–भय, पाप, अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, बेईमानी और कुमार्ग का प्रतिनिधि है, क्योंकि ये सब कुकर्म अन्धकार में या दूसरों को अंधेरे में रखकर किये जाते हैं। **प्रकाश**–सत्य, ज्ञान, ऋत, नियम, यथार्थ, सत्पथ, ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रतिनिधि है। अत एव कहा जा सकता है कि दीपावली का यह पर्व वस्तुतः आज की विविधतामयी भारतीय संस्कृति का एकमात्र प्रतीक है।

सद्गुणों तथा ईश्वरभक्ति से युक्त मानव का निर्माण वेदज्ञान से ही सम्भव

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो० 9412985121

मनुष्य अल्पज्ञ प्राणी होता है। इसका कारण जीवात्मा का एकदेशी, ससीम, अणु परिमाण, इच्छा व द्वेष आदि से युक्त होना होता है। मनुष्य सर्वज्ञ व सर्वज्ञान युक्त कभी नहीं बन सकता। सर्वज्ञता से युक्त संसार में एक ही सत्ता है और वह है सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा। परमात्मा ही सृष्टि में विद्यमान अनन्त संख्या वाले जीवों को उनके पूर्वजन्म के कर्मों व प्रारब्ध के आधार पर मनुष्य आदि अनेक योनियों में जन्म देता है। मनुष्य का जन्म भोग व अपवर्ग अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिये प्रयत्न करने के लिये होता है। मनुष्य जन्म लेकर हम अपने पूर्वजन्मों के संचित वा प्रारब्ध कर्मों के अनुसार सुख व दु:खरूपी भोगों को प्राप्त करते हैं। मनुष्य योनि उभय योनि है। अत: पूर्वजन्मों के कर्मों का भोग करते हुए हम नये शुभ व अशुभ कर्मों को भी करते हैं। नये कर्म मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं। इन्हें क्रियमाण, संचित व प्रारब्ध कर्म कहा जाता है। क्रियमाण कर्मों का फल व परिणाम हमें साथ साथ प्राप्त होता है। संचित कर्मों का फल इसी जीवन के उत्तर काल में उनके परिपक्व होने पर मिलता है। प्रारब्ध कर्म वह कर्म होते हैं जिनका हमें इस जन्म में फल नहीं मिलता। इन कर्मों का फल भोगने के लिये ही परमात्मा हमें नया जन्म देते हैं।

हमारे प्रारब्ध कर्मों के आधार पर ही परमात्मा द्वारा हमारी मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि अगणित जातियों में से किसी एक का निर्धारण होकर हमें वहां जन्म मिलता है। प्रारब्ध के अनुसार ही हमारी आयु निश्चित होती है तथा सुख व दु:ख प्राप्त होते हैं। मनुष्य जो कर्म कर लेता है, उसका फल उसे भोगना ही पड़ता है। उसके फल से बचने का मनुष्य के पास कोई उपाय नहीं है। कोई धर्मात्मा, आचार्य व मत-मतान्तर कर आचार्य या संस्थापक किसी मनुष्य के किये हुए पाप आदि कर्मों से उसे मुक्त व क्षमा प्रदान नहीं करा सकते। यदि कोई ऐसा कहता व मानता है तो वह सत्य न होकर असत्य होता है। ऋषि दयानन्द ने कहा है कि यदि परमात्मा स्वयं व किसी की प्रार्थना व प्रेरणा से कर्मों को क्षमा कर दे तो उसकी न्याय व्यवस्था समाप्त हो जायेगी। परमात्मा सभी जीवों के शुभाशुभ कर्मों का याथातथ्य फल यथासमय देता है। वह फल हमें साथ-साथ अथवा भावी काल सहित जन्म व जन्मान्तर में भोगने होते हैं। हमें इन सब बातों को जानकर ही अपने जीवन को जीना चाहिये। ऐसा करने से हम सत्कर्मों को करके अपने सुखों में वृद्धि तथा दु:खों को दूर कर सकते हैं। इससे अनभिज्ञ रहने पर हमसे अनजानें में भी अनेक अशुभ कर्म हो सकते हैं जिसका परिणाम हमें दु:ख वा दु:खों के रूप में भोगना पड़ता है। कर्मफल सिद्धान्त ही इस सृष्टि की उत्पत्ति, संचालन व पालन तथा जीवों के जन्म व मरण का मुख्य कारण व आधार है। मनुष्य को अधिक से अधिक सुख मिले तथा वह जन्म व मरण के बन्धन व इससे होने वाले दु:खों से दूर हो, इसके लिये मनुष्य को प्रयत्न करने होते हैं। वेदज्ञान इसमें एक आचार्य एवं मार्गदर्शक के रूप में सहायक होता है। इसके लिये हमें संसारस्थ सभी मनुष्यों को ज्ञानवान तथा सत्कर्मों का करने वाला और साथ ही सच्चा ईश्वर उपासक बनाना होगा। यदि यह गुण मनुष्यों में नहीं होंगे तो मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन तथा सामाजिक जीवन भी सुखमय नहीं हो सकते। संसार में सुख तभी हो सकता है कि जब सब मनुष्य ज्ञानवान हो तथा अपने निजी व सामाजिक कर्तव्यों को जानकर उनका यथोचित रीति से पालन करे। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेदों का ज्ञान दिया था। वेदों में मनुष्य का सर्वाङ्गीण विकास करने की क्षमता है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेदों में ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति सहित मनुष्य के लिये आवश्यक सभी विषयों का ज्ञान है। ईश्वर सहित जीवात्मा तथा प्रकृति का सत्यस्वरूप जानकर ही हम ईश्वर की सच्ची स्तुति, प्रार्थना व उपासना कर सकते हैं। वेदज्ञान से शून्य मनुष्य ईश्वर के सत्यस्वरूप व उसकी उपासना की विधि को नहीं जान सकते। महाभारत युद्ध के बाद वेदों का व्यवहार न होने के कारण वेद विलुप्त हो गये थे। वेदज्ञान के विलुप्त होने वा वेदों का प्रचार बन्द होने के कारण ही समाज में अज्ञान व अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा कुरीतियां उत्पन्न हुई थीं जिससे मनुष्य के व्यक्ति जीवन सहित संसार में दु:खों का प्रसार हुआ था।

वेदज्ञान के विलुप्त होने के कारण ही संसार में अविद्यायुक्त मत-मतान्तर उत्पन्न हुए जिन्होंने परस्पर स्पर्धा करते हुए मतान्तरण व परस्पर संघर्ष कर सामान्य मनुष्यों के जीवन को दु:खों से युक्त किया। अत: मत-मतान्तरों की अविद्या व परस्पर विरोधी बातों को दूर कर ही देश व समाज में सुख व शान्ति की स्थापना की जा सकती है। यही कार्य ऋषि दयानन्द ने अपने समय में किया था। इसके लिये ऋषि दयानन्द ने ईश्वर के सच्चे स्वरूप तथा मृत्यु पर विजय पाने के उपायों की खोज की थी। ऐसा करते हुए वह अनेक धार्मिक विद्वानों तथा योग गुरुओं सहित विद्या गुरुओं के सम्पर्क में आये। उन्होंने उन सबसे संगति कर ईश्वर, सत्यधर्म तथा मृत्यु पर विजय के साधनों पर चर्चा की। योगाभ्यास से वह ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर उसका साक्षात्कार कर सके थे। इस पर भी उनके मन में अनेक शंकायें थीं, जो विद्या प्राप्त कर ही दूर हो सकती थी। इसके लिये उन्होंने अपने लिए एक विद्यागुरु की खोज की थी। सौभाग्य से उन्हें वेदों के उच्च कोटि के विद्वान् प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती मथुरा विद्यागुरु के रूप में प्राप्त हुए थे।

स्वामी विरजानन्द जी से अध्ययन कर स्वामी दयानन्द जी की सभी शंकायें दूर हुई थी तथा उनकी सभी जिज्ञासाओं का समाधान हो गया था। स्वामी दयानन्द जी ने स्वामी विरजानन्द जी से सन् 1860 से सन् 1863 तक लगभग तीन वर्ष वेदांगों मुख्यत: आर्ष व्याकरण का अध्ययन किया था। इस अध्ययन से वह वेदों के मन्त्रों के यथार्थ अर्थों को जानने की क्षमता से सम्पन्न हुए थे। कालान्तर में उन्होंने वेदों को प्राप्त कर अपने धार्मिक व सामाजिक सिद्धान्त निश्चित किये। ऐसा कर लेने पर उन्होंने सभी मत-मतान्तरों के ग्रन्थों का गहन अध्ययन कर उनकी मान्यताओं व सिद्धान्तों एवं परम्पराओं का भी अध्ययन किया था। उन्हें विदित हुआ था कि सभी मत-मतान्तर अविद्या व अज्ञान से युक्त हैं। सभी मनुष्यों का यथार्थ धर्म तो एक ही होता है। संसार में ईश्वर एक ही है। सब मनुष्यों का जन्मदाता भी वही एक ईश्वर है। अत: ईश्वर की शिक्षा व उसके कर्म-फल सिद्धान्त को जानकर आचरण करना ही सत्यधर्म होता है। सब मनुष्यों का वह धर्म वेदों में निहित ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है। इस निश्चय को प्राप्त होकर ही विश्व के कल्याण हेतु महर्षि दयानन्द ने वेदप्रचार का कार्य आरम्भ किया था।

ऋषि दयानन्द ने एक आदर्श आचार्य व गुरु की तरह धर्म व समाज संबंधी अविद्या को दूर करने के लिये उसका खण्डन किया ... अविद्या युक्त कथनों के स्थान पर विद्यायुक्त वैदिक मा...ओं व सिद्धान्तों से देश देशान्तर की जनता को परिचित कराया। उन्होंने मनुष्य जीवन में यम व नियम अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान आदि गुणों को अपनाने पर बल दिया था। बिना इसके अपनाये मनुष्य सच्चा व आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत मनुष्य नहीं बन सकता। ऐसा बनकर ही मनुष्य को वर्तमान तथा भविष्य सहित पुनर्जन्म में भी सुख प्राप्त हो सकते हैं। मनुष्य व समाज की उन्नति के लिए सत्य का मण्डन तथा असत्य का खण्डन व समालोचना आवश्यक होती है। यही कार्य ऋषि दयानन्द ने किया। ऐसा करके ऋषि दयानन्द ने समाज के समाने सत्यधर्म जिसे मानवधर्म का पर्याय कह सकते हैं, प्रस्तुत किया है।

ऋषि दयानन्द को आशा थी कि संसार के सत्यप्रेमी सभी लोग उनके विचारों व मान्यताओं को स्वीकार कर लेंगे परन्तु ऐसा हुआ नहीं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में कहा है कि मनुष्य का आत्मा सत्य व असत्य को जानने वाला होता है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह तथा अविद्या आदि दोषों के कारण सत्य को छोड़कर असत्य में झुक जाता वा प्रवृत्त हो जाता है। इन्हीं कारणों से मनुष्य सत्य से दूर होकर मत-मतान्तरों में रहकर अपना पूरा जीवन गुजार देते हैं। वर्तमान यही स्थिति में संसार में परिलक्षित होती है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में वेदों के सत्यस्वरूप सहित सत्य मानवधर्म का प्रकाश भी किया है। सहस्रों व लाखों निष्पक्ष सत्य प्रिय लोगों ने सत्यार्थप्रकाश, वेद तथा आर्यसमाज को अपनाया। किसी ने पूर्ण तो किसी ने आंशिक रूप में अपने हिताहित के अनुसार ऋषि दयानन्द व वेदों के सिद्धान्तों को स्वीकार किया। इससे देश देशान्तर में समाज सुधार की नींव पड़ी थी।

यह देश व संसार का दुर्भाग्य ही है कि सभी लोगों ने सत्यार्थप्रकाश में वर्णित वेदों की सत्य मान्यताओं को स्वीकार नहीं किया। इसके परिणाम हमारे सामने हैं। वेद के मानने वाले भी पूर्णत: संगठित नहीं हैं। इससे देश व समाज को अनेक हानियां हो रही हैं। संगठित होकर धर्म का प्रभावशाली प्रचार इसी कारण से विगत अनेक वर्षों से नहीं हो सका। अत: सभी मनुष्यों को वेद व ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन कर सत्य को जानने व उसे अपनाने की प्रेरणा

लेनी चाहिये। इससे ही मनुष्य के निजी जीवन सहित परलोक के जीवन का सुधार व उन्नति होगी। वेदों का अध्ययन करने से हमें मनुष्य के धारण करने योग्य सभी सत्य गुणों का ज्ञान होता है। यम व नियमों में भी उनका दिग्दर्शन होता है। हमें मनुष्य को धारण करने योग्य सभी गुणों को जानकर उन्हें धारण करना चाहिये। सबको पक्षपात रहित होना चाहिये व न्याय के सिद्धान्तों का पालन करना चाहिये। वेद अनुमोदित पंच महायज्ञों का भी सबको सेवन करना चाहिये। इससे हम सच्चे ईश्वर, मातृ, पितृ तथा आचार्यों के भक्त बनेंगे। इससे हमारी अविद्या दूर होकर हम सर्वज्ञ ईश्वर की विद्या वेद से युक्त होकर अज्ञान से मुक्त और विद्या से युक्त हो सकेंगे। ऐसा करके ही हमारे जीवन से पापकर्मों की निवृत्ति होने तथा शुभकर्मों की अधिकता होने से हम दुःखों से मुक्त तथा सुखों व आनन्द से युक्त होंगे तथा परलोक में भी हमें सुख, शान्ति व मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। वेदों के अनुसार जीवन व्यतीत करने से ही मनुष्य की सवाङ्गीण उन्नति होती है। वेदों का ज्ञान ही सबके लिये जानने योग्य व आचरण करने योग्य है। वेद का अध्ययन व आचरण करने वाले मनुष्य को जीवन में कभी पश्चात्ताप नहीं होता। वह जन्म व जन्मान्तरों में सुख पाता है। ईश्वर ऐसी ही अपेक्षा सभी जीवों से करते हैं कि वह सब वेद विहित कर्मों को करते हुए अपने जीवन का कल्याण करें।

पंचकुंडीय हवन-यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज नगीना में चल रही 6 दिवसीय रामकथा का समापन हवन-यज्ञ में पूर्णाहुति के साथ हुआ। श्री पदमचन्द आर्य एवं श्री महेन्द्र गोयल ने बताया कि ओमप्रकाश आर्य व उनके साथी भजनोपदेश द्वारा संगीतमय रामकथा का सुन्दर वाचन किया था, जिसे सुनकर जनता भावविभोर हो गई तथा मन्दिर के लिए दो लाख रुपये की दानराशि देने की भी घोषणा की। गुरुग्राम के विधायक श्री सुधीर सिंगला प्रातःकाल हवन-यज्ञ में जिला नूंह के भाजपा के पूर्व अध्यक्ष व गोसेवा आयोग हरयाणा के सदस्य श्री सुरेन्द्र प्रताप आर्य भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। श्री पदमचन्द आर्य का समाज में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए विशेष रूप से शॉल ओढ़ाकर व प्रतीक चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

–रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, 7206865945

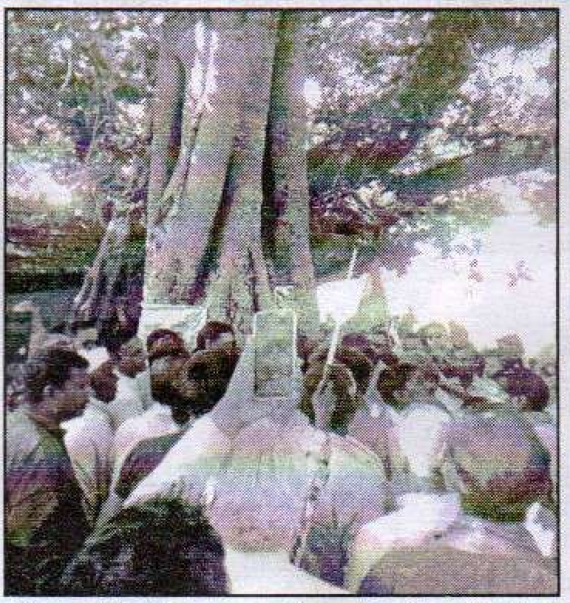

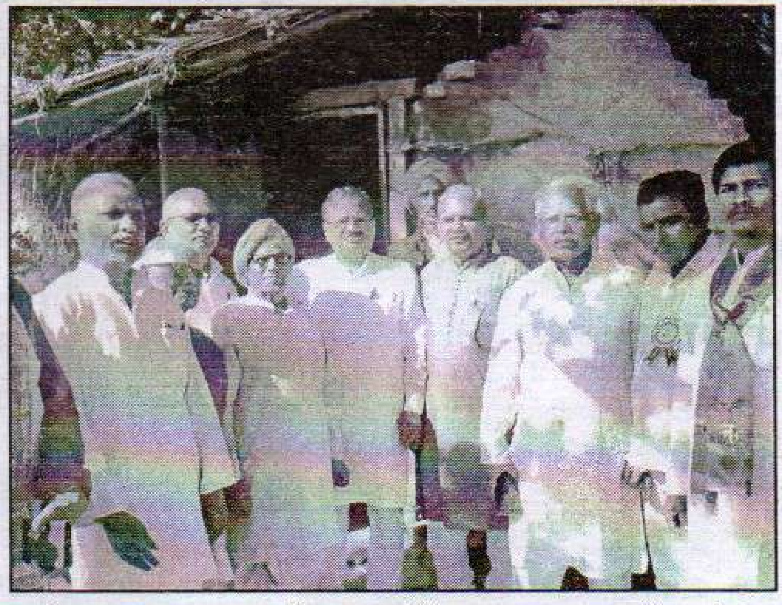

गांव चांसी, जिला बुलंदशहर गंगानदी के किनारे पर वह स्थान जहाँ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती कई बार पधारे एवं तपस्या की, जनता की शंका-समाधान भी करते थे। उनकी पुरानी कुटिया एवं 200 वर्ष पुराने वटवृक्ष अभी भी स्थित है। ग्रामवासियों ने सौ बीघा जमीन देने का वादा किया जहाँ बहुत बड़ा दयानन्द सरस्वती की साधना-स्थली स्मारक बनेगा। –डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह तोमर

सच्चे ईश्वरभक्त बनो

जगदीश्वर के गुण गाओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ टेक॥
ईश्वर है निर्लेप निरंजन, निराकार वह दाता।
वह सर्वज्ञ सर्वव्यापक है, जग का है निर्माता।
उसको समझो, समझाओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 1॥
अजर अमर सर्वशक्तिमान् है, है वह अन्तर्यामी।
मात-पिता-गुरु है सच्चा, दुनिया का है स्वामी।
तुम उसे प्रेम से ध्याओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 2॥
सूरज, चांद, सितारे, पृथ्वी, प्रभु ने अजब बनाए।
भांति-भांति के पशु-पक्षी हैं, सबके मन को भाए।
तुम उसे नहीं बिसराओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 3॥
बिन आंखों के देख रहा है, सबको भाग्यविधाता।
बिन हाथों के जग को रचता, ऐसा है निर्माता।
तुम शरण उसी की आओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 4॥
मात गर्भ में बालक को वह, दाता भोजन देता।
बदले में भगवान् किसी से, कौड़ी एक न लेता।
उस प्रभु के दर्शन पाओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 5॥
कर्मों के अनुसार सभी को, फल देता न्यायकारी।
उससे कोई ना बच पाता, धनी, वीर बलधारी।
तुम वैदिक धर्म निभाओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 6॥
राम-कृष्ण, विक्रम जैसे, सब चले गये बलधारी।
बाली, रावण, कुम्भकर्ण से, रहे ना अत्याचारी।
तुम ज्यादा तज बौराओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 7॥
शुभकर्मों से दिया प्रभु ने, हम को मानव चोला।
वेद शास्त्र दर्शाते हैं यह, चोला है अनमोला।
तुम कुछ तो लाभ उठाओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 8॥
कुटुम्ब कबीला महल हवेली, काम नहीं आयेंगे।
बेटा, पोते, पत्नी और भाई, साथ नहीं ये जायेंगे।
जागो, तुम धर्म कमाओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 9॥
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, चाहो अगर भलाई।
नन्दलाल निर्भय अपनाओ, वैदिक धर्म सुखदाई।
वृथा मत समय गंवाओ रे, दुनिया के नर-नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर-नारी॥ 10॥

–पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, पलवल मो० 9813845774

दानी सज्जन वेदप्रकाश आर्य ने रजाई वितरण कार्यक्रम का किया आयोजन

बाल सेवा आश्रम भिवानी के प्रधान एवं आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी के उपप्रधान श्री वेदप्रकाश आर्य ने भिवानी में रजाई वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत उन्होंने 215 रजाई गरीब व असहाय व्यक्तियों को सर्दी के ऋतु से बचाव हेतु वितरण किया गया। कार्यक्रम के उपरान्त शेष राशि को आर्य वीर दल भिवानी को समर्पित किया। श्री वेदप्रकाश आर्य जी हर वर्ष इसी तरह गरीब व असहाय लोगों के लिए रजाई वितरण कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। सम्पूर्ण कार्यक्रम वेदप्रकाश आर्य की देखरेख में सम्पन्न हुआ। आर्य जी बहुत ही सरल स्वभाव, मिलनसार, परिश्रमी, महर्षि दयानन्द जी के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने वाले तथा बहुत ही मेहनती, ईमानदार व्यक्ति हैं। इन्होंने तथा सभी लोगों ने मिलकर स्थानीय विधायक घनश्याम सर्राफ का माल्यार्पण द्वारा स्वागत कर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश भेंट किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामन्त्री एवं आर्य वीर दल हरयाणा के संचालक श्री उमेद सिंह शर्मा ने महर्षि दयानन्द की जीवनी पर प्रकाश डाला। साथ ही वैद्य बनवारी लाल जी आर्य की स्मृति में ऋषिलंगर का भी आयोजन किया गया।

–मनजीत श्योराण, सहायक कार्यालयाधीक्षक

स्वर्गीय श्री रामनिरंजन जी (पूर्व प्रिंसिपल) व स्वर्गीय श्रीमती मगनमूर्ति जी (पूर्व अध्यापिका) आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नारायणगढ़ जिला अम्बाला की मधुर स्मृति में दिनांक 22.10.2023 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें अन्य आर्यजनों के अलावा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य श्री रघुवीरसिंह, गांव-पो० बनौंदी, जिला अम्बाला विशेष रूप से उपस्थित रहे।

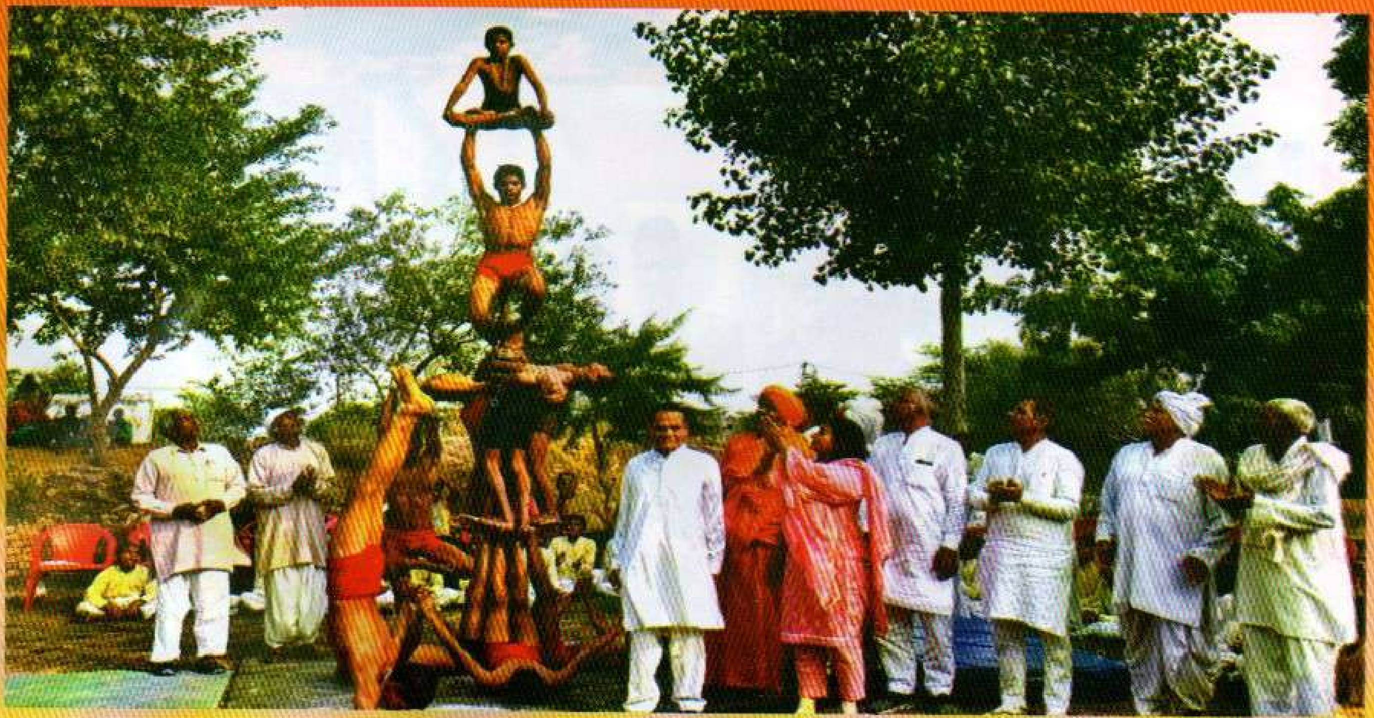

आर्यसमाज वेद मन्दिर पाण्डवान जिला चरखी दादरी में आर्य वीर दल हरयाणा की ओर से व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी मन्त्री श्री उमेद सिंह शर्मा जी एवं अन्य आर्यजन उपस्थित थे।

डी.ए.वी. शताब्दी स्कूल सिरसा के बच्चों को सम्मानित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी मन्त्री श्री उमेद सिंह शर्मा तथा साथ में श्री रणदीप जी, प्रधान आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जी.टी. रोड पानीपत, श्री मनजीत श्योराण, सहायक कार्यालयाधीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के वार्षिक समारोह में विज्ञान प्रदर्शनी कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी मन्त्री श्री उमेद सिंह शर्मा तथा साथ में श्री राजकुमार जी आर्य, प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र, श्री रणदीप जी, प्रधा आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जी.टी. रोड पानीपत, श्री जगदीश सींवर, विशेष प्रतिष्ठित अन्तरंग सदस्य, सिरसा आ अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा